सांस्कृतिक प्रार्थना

आ ब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायतामा राष्ट्रे राजन्यः शूर इषव्योऽतिव्याधी महारथो जायताम्, दोग्ध्री धेनुर्वोढाऽनड्वान् आशुः सप्तिः पुरन्धिर्योषा जिष्णू रथेष्ठाः सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो जायताम्, निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु, फलवत्यो न ओषधयः पच्यन्तां, योगक्षेमो नः कल्पताम्।—शुक्ल यजुर्वेद २२।२२

हे भगवन्, हमारे राष्ट्र में ब्राह्मण ब्राह्मतेज से सम्पन्न हो—वेद के अध्ययनशील हो तथा यज्ञ के उपासक हो। क्षत्रिय शूर, बाण चलाने में कुशल, शत्रुओं का संहार करनेवाला तथा महारथी उत्पन्न हो। धेनु दूध देनेवाली हो। बैल बोझ ढोनेवाला हो; घोड़ा शीघ्रगामी हो। नारी सुन्दर गात्रवाली तथा रमणीय गुणवाली हो। रथ पर बैठकर समराङ्गण में उतरनेवाला योद्धा विजयी बने। युवक सभा में बैठने की योग्यतावाला हो—शिष्ट तथा सुशिक्षित, गुणी तथा विनयी हो। हमारे राष्ट्र में आवश्यकता के अनुसार मेघ वृष्टि दे। हमारी गेहूँ, धान, जव आदि औषधियाँ फलयुक्त हों और स्वयमेव पक्व हों। हमारा योगक्षेम सदा सम्पन्न हो—अलब्ध वस्तु का लाभ हो और लब्ध वस्तु का ठीक पालन हो।